पञ्चमः पाठः

नारी-महिमा

(मनुस्मृतेः)

[मानव के सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश डालनेवाला जो ग्रन्थ इतना उपयोगी हो कि सर्वदा स्मरण रखना अभीष्ट हो, उसे स्मृति कहते हैं। प्रस्तुत शीर्षक में जिन श्लोकों का उल्लेख किया गया है वे मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय से अवतरित हैं। मनुस्मृति न केवल सर्वाधिक प्राचीन है, अपितु यह सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण भी है। इसके महत्त्व के ही कारण सर विलियम जोन्स ने सन् १७९० में इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया था। मनु को मानव जाति के आदि पुरुष के रूप में वेदों में स्मरण किया गया है।

प्रस्तुत श्लोकों में समाज एवं परिवार के लिए स्त्रियों के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। हमारे भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही नारियों का बहुत सम्मान किया जाता रहा है। यहाँ तक कह दिया गया है कि जहाँ पर नारियों का सम्मान होता है वहाँ पर देवता निवास करते हैं और जहाँ पर अपमान होता है वहाँ के समस्त कार्य असफल हो जाते हैं। स्त्रियों के प्रसन्न रहने से सम्पूर्ण कुल प्रसन्न रहता है तथा अप्रसन्न रहने से परिवार एवं वंश की शोभा नहीं होती। कल्याण चाहनेवाले को स्त्रियों का सम्मान वस्त्र, आभूषण आदि से करना चाहिए। माता को एक हजार पिता से श्रेष्ठ बताया गया है। माँ के बराबर गौरवपूर्ण कोई नहीं है। नारी को गृहशोभा तथा गृहलक्ष्मी कहा गया है, अतः नारी का पद बहुत ही उच्च है, उसी का विवेचन प्रस्तुत पाठ में किया गया है।]

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते, सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।१।।

स्त्रियां तु रोचमानायां, सर्वं तद्रोचते कुलं।
तस्यां त्वरोचमानायां, सर्वमेव न रोचते।।२।।

तस्मादेताः सदा पूज्या, भूषणाच्छादनाशनैः।
भूतिकामैर्नरैर्नित्यं, सत्कार्येषूत्सवेषु च।।३।।

पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा।
पूज्या भूषयितव्याश्च, बहुकल्याणमीप्सुभिः।।४।।

उपाध्यायान्दशाचार्य, आचार्याणां शतं पिता।
सहस्रं तु पितृन्माता, गौरवेणातिरिच्यते।।५।।

पूजनीया महाभागाः, पुण्याश्च गृहदीप्तयः।
स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्ताः, तस्माद्रक्ष्या विशेषतः।।६।।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित श्लोकों की ससन्दर्भ व्याख्या हिन्दी में कीजिए–

(क) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते, सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

(ख) तस्मादेताः सदा पूज्या, भूषणाच्छादनाशनैः।
भूतिकामैर्नरैर्नित्यं, सत्कार्येषूत्सवेषु च।।

(ग) पूजनीया महाभागाः, पुण्याश्च गृहदीप्तयः।
स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्ताः, तस्माद्रक्ष्या विशेषतः।।

२. निम्नलिखित सूक्तियों की ससन्दर्भ व्याख्या हिन्दी में कीजिए–

(क) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।

(ख) स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्ताः।

३. मनुस्मृति से उद्धृत प्रस्तुत पाठ में नारी-महिमा के सम्बन्ध में जो विचार प्रकट किये गये हैं, उनका सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

४. पहले और अन्तिम श्लोक का अर्थ संस्कृत में लिखिए।

५. क्यों कहा गया है कि माता के समान गौरवपूर्ण स्थान किसी अन्य का नहीं है?

६. नारी के सम्मान की रक्षा हमें क्यों करनी चाहिए?

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

आपने भी कुछ महान् एवं विदुषी नारियों के बारे में पढ़ा एवं सुना होगा। ऐसी नारियों की एक सूची बनाइए।

●●●